अध्याय 3: कविता के बहाने / बात सीधी थी पर

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	कविता के साथ	7 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	कविता के आसपास	2 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है?

हल

कविता 'कविता के बहाने' में कवि कुँवर नारायण ने कविता को बच्चों के खेल से उपमित किया है।
बच्चे जब खेलते हैं तो वे किसी भी सीमा को नहीं मानते — न घर की सीमा, न भाषा की, न समय की।
कवि कहते हैं: 'यह घर, वह घर / सब घर एक कर देने के माने / बच्चा ही जाने।'
'सब घर एक कर देना' का अर्थ है — कविता (और बच्चे का खेल) सभी सीमाओं, बंधनों और भेदभावों को मिटा देती है।
कविता जड़-चेतन, अतीत-वर्तमान-भविष्य, घर-बाहर — सभी को एक सूत्र में पिरो देती है।
जैसे बच्चा खेल में किसी घर या दीवार को नहीं मानता, उसी प्रकार कविता की रचनात्मक ऊर्जा सभी सीमाओं को तोड़ देती है और पूरी सृष्टि को एक इकाई बना देती है।

उत्तर: 'सब घर एक कर देने के माने' है — कविता की रचनात्मक शक्ति सभी सीमाओं और भेदों को मिटाकर पूरे संसार को एकजुट कर देती है, ठीक वैसे जैसे बच्चा खेल में किसी भी घर या बंधन को नहीं मानता।

प्रश्न 2

'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

हल

कवि ने कविता को चिड़िया की उड़ान और फूल के खिलने से जोड़ा है।
चिड़िया की उड़ान की अपनी एक सीमा होती है — वह आकाश में उड़ती है, पर एक निश्चित दायरे में।
फूल का खिलना भी प्राकृतिक नियम से बँधा है — वह खिलता है, महकता है, पर अंततः मुरझा जाता है।
कविता 'उड़ने' और 'खिलने' दोनों से आगे जाती है —
'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' — कविता की उड़ान असीमित है, वह भीतर-बाहर, इस घर-उस घर सब जगह पहुँचती है।
'बिना मुरझाए महकने के माने / फूल क्या जाने' — कविता फूल की तरह खिलती है, पर कभी मुरझाती नहीं; वह चिरस्थायी है।
इस प्रकार 'उड़ना' और 'खिलना' कविता की असीम संभावनाओं और शाश्वतता के प्रतीक हैं।

उत्तर: 'उड़ना' कविता की असीमित, निर्बंध यात्रा का प्रतीक है (चिड़िया से परे), और 'खिलना' कविता के चिरस्थायी, न मुरझाने वाले सौंदर्य का। कविता का उड़ना और खिलना इन दोनों की सीमाओं से परे है।

प्रश्न 3

कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

हल

कवि ने 'कविता के बहाने' में कविता और बच्चे को समानांतर रखा है — इसके अनेक कारण हैं:
1. असीमित कल्पना — बच्चे के सपने असीम होते हैं, कोई बंधन नहीं; कविता भी असीमित संभावनाओं की दुनिया रचती है।
2. खेल और रचनात्मकता — बच्चा खेल में नियम तोड़ता है; कविता भी भाषा-शैली की सीमाओं को तोड़कर नई अभिव्यक्ति देती है।
3. स्वतंत्रता — बच्चे का खेल किसी घर, भाषा या समय की सीमा नहीं मानता; कविता भी काल, देश और भाषा की सीमाओं के पार जाती है।
4. सहजता — बच्चा जो कुछ करता है वह निश्छल और सहज होता है; कविता भी जब सहज होती है तभी प्रभावशाली होती है।
5. सार्वभौमिकता — बच्चा 'सब घर एक कर देता है'; कविता भी सभी को एक सूत्र में पिरोती है।
इसीलिए कवि ने कविता और बच्चे को समानांतर रखा — दोनों में निर्बंध रचनात्मकता है।

उत्तर: कविता और बच्चे दोनों में असीमित कल्पनाशक्ति, स्वतंत्रता, सहजता और सभी सीमाओं को तोड़ने की क्षमता होती है। बच्चा जैसे खेल में कोई बंधन नहीं मानता, वैसे ही कविता भी भाषा, काल और देश की सीमाओं को पार करती है।

प्रश्न 4

कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं?

हल

कविता 'कविता के बहाने' में एक पंक्ति है: 'बिना मुरझाए महकने के माने / फूल क्या जाने?'
फूल खिलता है, महकता है, पर अंततः मुरझाकर नष्ट हो जाता है — यह प्रकृति का नियम है।
किंतु कविता फूल की तरह खिलती और महकती है, पर कभी मुरझाती नहीं।
कविता शब्दों में जीवित रहती है, पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपनी सुगंध फैलाती रहती है।
कालिदास, कबीर, मीरा, तुलसी की कविताएँ सैकड़ों वर्षों बाद भी उतनी ही ताज़ी और प्रासंगिक हैं।
अर्थात् — 'बिना मुरझाए महकने के माने' है कविता की कालजयी प्रकृति — वह चिरस्थायी है, अमर है।
यह माने केवल कविता ही जानती है, फूल नहीं जान सकता।

उत्तर: 'बिना मुरझाए महकने के माने' है कविता की कालजयी, अमर प्रकृति। जबकि फूल खिलकर मुरझा जाता है, कविता युगों-युगों तक अपनी सुगंध (अर्थ, भाव, संदेश) बिखेरती रहती है — कभी पुरानी नहीं होती।

प्रश्न 5

'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है?

हल

यह प्रश्न 'बात सीधी थी पर' कविता से संबंधित है।
कविता के अंत में 'बात' कवि से पूछती है: 'क्या तुमने भाषा को / सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?'
'भाषा को सहूलियत से बरतना' का अर्थ है — भाषा का सहज, स्वाभाविक और उपयुक्त प्रयोग करना।
जैसे किसी पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है — पेंच को जबरदस्ती नहीं लगाया जाता, वह सहूलियत से लग जाता है।
उसी तरह हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं — उन्हें जबरदस्ती तोड़ा-मरोड़ा नहीं जाना चाहिए।
जब सही बात सही शब्द से जुड़ती है तो कोई दबाव या अतिरिक्त मेहनत नहीं होती — भाषा सहज प्रवाहित होती है।
अर्थात् — भाषा को आयासपूर्वक, दिखावे के लिए या जटिल बनाने के लिए नहीं, बल्कि सरलता और स्वाभाविकता से प्रयोग करना ही 'सहूलियत से बरतना' है।

उत्तर: 'भाषा को सहूलियत से बरतना' का अर्थ है — भाषा का सहज, स्वाभाविक और उपयुक्त प्रयोग करना। जिस प्रकार पेंच के लिए सही खाँचा होता है और वह बिना जबरदस्ती के लग जाता है, उसी प्रकार सही बात के लिए सही शब्द का चुनाव बिना किसी आयास के करना ही भाषा को सहूलियत से बरतना है।

प्रश्न 6

बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है' कैसे?

हल

कवि कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' इसी विरोधाभास को उकेरती है।
बात और भाषा का संबंध पेंच और खाँचे जैसा है — बात (कथ्य) को व्यक्त करने के लिए भाषा (माध्यम) चाहिए।
जब बात सहज शब्दों में कही जाए तो वह सरल और प्रभावशाली होती है।
किंतु जब कोई भाषा को जरूरत से ज़्यादा तोड़ता-मरोड़ता है, उलटा-पलटा करता है और घुमाता-फिराता है — तो सीधी बात टेढ़ी हो जाती है।
कवि ने इस स्थिति को 'बात की चूड़ी मरना' कहा है — पेंच जब बेतरह कसा जाए तो उसकी चूड़ी मर जाती है और वह बेकार हो जाता है।
इसी तरह जब भाषा के चक्कर में बात को अनावश्यक जटिल बनाया जाए — दिखावे के लिए या 'तमाशबीनों की शाबाशी' पाने के लिए — तो बात प्रभावहीन हो जाती है।
अर्थात् — भाषा जब माध्यम न रहकर बाधा बन जाए तो सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है।

उत्तर: जब भाषा को जरूरत से ज़्यादा तोड़ा-मरोड़ा जाता है — दिखावे के लिए या वाहवाही पाने के लिए — तो 'बात की चूड़ी मर जाती है' और वह प्रभावहीन हो जाती है। भाषा माध्यम है, साध्य नहीं; जब वह साध्य बन जाती है तो सीधी बात टेढ़ी हो जाती है।

प्रश्न 7

बात (कथ्य) के लिए नीचे दी गई विशेषताओं का उचित बिंबों/मुहावरों से मिलान करें। बिंब/मुहावरा | विशेषता (क) बात की चूड़ी मर जाना | कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना (ख) बात की पेंच खोलना | बात का पकड़ में न आना (ग) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना | बात का प्रभावहीन हो जाना (घ) पेंच को कील की तरह ठोंक देना | बात में कसावट का न होना (ङ) बात का बन जाना | बात को सहज और स्पष्ट करना

हल

सही मिलान इस प्रकार है:

(क) बात की चूड़ी मर जाना → बात का प्रभावहीन हो जाना

(पेंच की चूड़ी मरने पर वह बेकार हो जाता है; भाषा के जबरदस्त प्रयोग से बात प्रभावहीन हो जाती है।)

(ख) बात की पेंच खोलना → बात को सहज और स्पष्ट करना

(पेंच खोलना = उलझन सुलझाना; बात की पेंच खोलना = बात को स्पष्ट करना।)

(ग) बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना → बात का पकड़ में न आना

(शरारती बच्चा पकड़ में नहीं आता; इसी तरह कभी-कभी बात भी पकड़ में नहीं आती।)

(घ) पेंच को कील की तरह ठोंक देना → बात में कसावट का न होना

(कील को ठोंका जाता है, कसाव नहीं होता; ऐसे ही जबरन ठोंकी गई बात में कसावट नहीं होती।)

(ङ) बात का बन जाना → कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना

(बात तभी 'बनती' है जब कथ्य और भाषा में सही सामंजस्य हो।)

उत्तर: (क) → बात का प्रभावहीन हो जाना; (ख) → बात को सहज और स्पष्ट करना; (ग) → बात का पकड़ में न आना; (घ) → बात में कसावट का न होना; (ङ) → कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना।

प्रश्नावली 3.2 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

व्याख्या करें — जोर जबरदस्ती से बात की चूड़ी मर गई और वह भाषा में बेकार घूमने लगी।

हल

ये पंक्तियाँ कुँवर नारायण की कविता 'बात सीधी थी पर' से ली गई हैं।
संदर्भ: कवि बता रहे हैं कि जब उन्होंने एक सीधी बात को भाषा में व्यक्त करने के लिए जोर-जबरदस्ती की — भाषा को उलटा-पलटा, तोड़ा-मरोड़ा — तो क्या हुआ।
बिंब: 'चूड़ी' और 'पेंच' का बिंब — पेंच की चूड़ी तब मरती है जब उसे बेतरह कसा जाए; उसके बाद वह अपनी जगह पर ठीक से नहीं बैठता, बेकार घूमता रहता है।
व्याख्या: जब कवि ने 'जोर जबरदस्ती से' — अर्थात् अनावश्यक आयास, दिखावटी भाषा और कृत्रिम शब्दों से — बात कहने की कोशिश की, तो बात अपना प्रभाव और कसाव खो बैठी।
'चूड़ी मरना' = बात का प्रभावहीन, बेकार हो जाना।
'भाषा में बेकार घूमना' = बात अर्थहीन रूप से भाषा में चक्कर लगाती रही — न ठीक से व्यक्त हुई, न श्रोता तक पहुँची।
व्यापक अर्थ: जब भाषा को माध्यम के बजाय दिखावे का साधन बनाया जाता है, तो कथ्य की 'चूड़ी' मर जाती है — बात अपनी सारी शक्ति और कसावट खो देती है।

उत्तर: जब कवि ने जोर-जबरदस्ती से भाषा को तोड़-मरोड़कर बात कहने की कोशिश की, तो जैसे पेंच की चूड़ी बेतरह कसने से मर जाती है, वैसे ही 'बात की चूड़ी मर गई' — बात प्रभावहीन हो गई और भाषा में बेकार घूमने लगी अर्थात् न ठीक से व्यक्त हुई न किसी तक पहुँची।

प्रश्न 2

आपसदारी: 'सुंदर है सुमन, विहग सुंदर / मानव तुम सबसे सुंदरतम।' — पंत की इस कविता में प्रकृति की तुलना में मनुष्य को अधिक सुंदर और समर्थ बताया गया है। 'कविता के बहाने' कविता में से इस आशय को अभिव्यक्त करने वाले बिंदुओं की तलाश करें।

हल

पंत की पंक्तियों का आशय है — फूल, पक्षी (प्रकृति) सुंदर हैं, पर मनुष्य सबसे सुंदर और समर्थ है।
'कविता के बहाने' में कुँवर नारायण ने क्रमशः चिड़िया, फूल और बच्चे (मनुष्य) की बात की है —
बिंदु 1: चिड़िया की उड़ान की सीमा है — 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' — चिड़िया उड़ सकती है, पर कविता की उड़ान को नहीं समझ सकती।
बिंदु 2: फूल खिलता है पर मुरझा जाता है — 'बिना मुरझाए महकने के माने / फूल क्या जाने' — फूल की खिलने की सीमा है।
बिंदु 3: बच्चा (मनुष्य) सबसे समर्थ है — 'सब घर एक कर देने के माने / बच्चा ही जाने।' — बच्चे के खेल (और कविता) में कोई सीमा नहीं; वह सब घर एक कर देता है।

इस प्रकार 'कविता के बहाने' में भी चिड़िया और फूल (प्रकृति) की सीमाएँ बताकर बच्चे (मनुष्य) को सबसे असीमित और समर्थ दिखाया गया है — जो पंत के भाव से मेल खाता है।

उत्तर: 'कविता के बहाने' में चिड़िया की उड़ान सीमित है, फूल मुरझा जाता है, किंतु बच्चा 'सब घर एक कर देता है' — उसके खेल और सपनों की कोई सीमा नहीं। यही पंत के 'मानव तुम सबसे सुंदरतम' के आशय से मेल खाता है — प्रकृति सुंदर है पर मनुष्य की कल्पना और रचनात्मकता सबसे असीम है।